अंक – छः
अप्रैल – जून 2016

परिवर्तन
PARIVARTAN
समेकित ग्रामीण समुदाय विकास हेतु तक्षशिला की पहल

ग्राम : नरेन्द्रपुर, प्रखंड : जीरादेई
जिला : सिवान, बिहार
दूरभाष : 07759863369

तक्ष शिला

बाल संवाद

प्यारे दोस्तो,

आपके हाथ मैं हूँ "चहकने की ललक"।

हाँ, यही है मेरा नाम मुझे लिखने वाले मेरे बाल लेखको ने दिया है। ये परिवर्तन के बच्चे है जो मेरे लिए लिखते हैं।

उनका यह मानना है कि जब वह मुझसे जुड़े, मेरे लिए लिखा तो उन्होंने खुद को उन्मुक्त महसूस किया। और वह बेहद खुश थे, उन दोस्तों का आभार।

आपकी ही,
चहकने की ललक

अपनी बात

बरसात

बारिश होता है तो मेढ़क टरटराता है। बारिश होता है तो ठंडा लगता है। बादल के पास से पानी आता है, पेड़ पौधे हरे हो जाते हैं, हमलोगों को आक्सीजन मिलता है। बारिश के पानी खेत में लग जाता है। तो खेत को जोतते हैं, और बीज बोते हैं।

सोनू कुमार, कक्षा–5, मियाँ भटकन

परिश्रम

अपनी बात

मेरा भाई 10 के परिक्षा में फस्ट आया तो मेरे घर के सभी लोग खुश हो गए, मेरा भाई खुश था। वह अभी 15 साल का है। दो भाई और एक बहन है, राहुल, रंजन, सीता है। उसका 11 में नाम लिखाया है। वह अब रोज पढ़ने स्कूल जाता है। मैडम उसको बहुत मानती है। हम तीनों एक साथ रहते हैं।

विभा कुमारी, कक्षा–6, मियाँ भटकन

आपबीती

गर्मी की छुट्टी

गर्मी की छुट्टी का इंतजार गर्मी पड़ते ही शुरू हो जाता है, पहले सुबह में पढ़ाई होती है, उसके बाद गर्मी की छुट्टी होती है, एक बार गर्मी की छुट्टी में नानी घर गये तो पूरा महीना गर्मी की छुट्टी वही बिताये। ममेरे भाई बहनों के साथ और मौसेरे भाई बहन भी आये थे, उनके साथ छुट्टीयों में खुब मजा आया हम बारिश में खेलते, बादल गरजता था, कभी घना अंधेरा हो जाता, बहुत मजा आया।

अर्चना कुमारी, कक्षा–6
मियाँ भटकन

कहानी

परीक्षा

जब मैं 7 कक्षा में थी तो मैं सबसे तेज थी, मैं ज्यादा अंग्रेजी पढ़ती थी, जब हम लोग परीक्षा दिये तो मेरा और मेरी दोस्तों का नम्बर बहुत अच्छा आया था, हम बहुत खुश थे, हम और मेरी दोस्त एक साथ रहते थे,

एक दिन हम स्कूल से पढ़कर आ रहे थे तो मेरे सिर पर एक बॉस गिर गया, तब से मेरी यादास कम हो गये, मैं कुछ पढ़ती हूँ तो मुझे याद नहीं रहता, मैं भुल जाती हूँ। अब मैं परिवर्तन आने लगी हूँ, यहाँ मुझे बहुत कुछ करने को मिलता है।

प्रतिमा कुशवाहा, कक्षा–8, जमापुर

आपबीती

बारिश

हमलोगों को बारिश अच्छा लगता है, जब बारिश आता है तो हमलोग घर में रहते है, क्योंकि बारिश में भींग जाने से ठंड लगती है, घर पर डाट सुनना पड़ता है, जब वर्षा कम होती है, तब घर से बाहर निकलते हैं, सड़क किचड़ से भरा रहता है, घर से निकलना कठिन हो जाता है, हम खेल नहीं पाते कही घूम नहीं पाते हैं, परिवर्तन भी नहीं आ पाते हैं, बारिश होने से किसान बहुत खुश रहते हैं, खेत में पानी लगता है तो धान रोपा जाता है। अगर फसल नहीं होगा तो सभी लोग भुख से मर जायेंगे, भगवान से मेरी प्रार्थना है, कि बारिश हर दम होती रहे।

कृति कुमारी, कक्षा–8
मियाँ भटकन

जंगल में रहते थे राक्षस

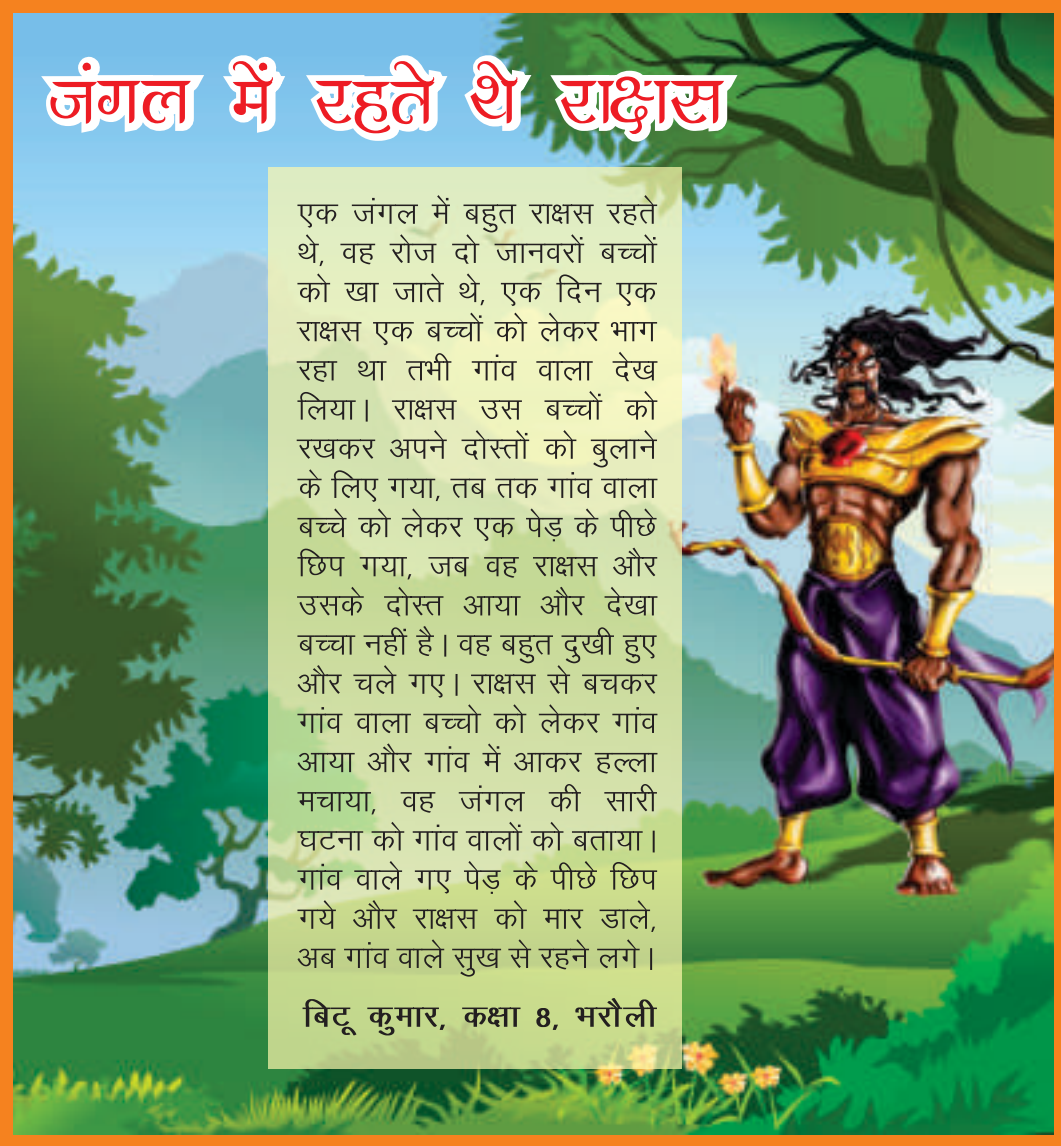

एक जंगल में बहुत राक्षस रहते थे, वह रोज दो जानवरों बच्चों को खा जाते थे, एक दिन एक राक्षस एक बच्चों को लेकर भाग रहा था तभी गांव वाला देख लिया। राक्षस उस बच्चों को रखकर अपने दोस्तों को बुलाने के लिए गया, तब तक गांव वाला बच्चे को लेकर एक पेड़ के पीछे छिप गया, जब वह राक्षस और उसके दोस्त आया और देखा बच्चा नहीं है। वह बहुत दुखी हुए और चले गए। राक्षस से बचकर गांव वाला बच्चो को लेकर गांव आया और गांव में आकर हल्ला मचाया, वह जंगल की सारी घटना को गांव वालों को बताया। गांव वाले गए पेड़ के पीछे छिप गये और राक्षस को मार डाले, अब गांव वाले सुख से रहने लगे।

बिटू कुमार, कक्षा 8, भरौली

आपबीती

शादी

चाचा के शादी में हम बाराती गये थे, हम खुब नाचे, गाये थे, चाचा के गाड़ी में चाचा के साथ बैठकर गये थे। हम लोग वहाँ गये, तो सबसे पहले हमें नास्ता मिला। हमलोग नास्ता करके, चाचा के साथ गये वहां निकाह हुआ। मौलाना साहब नाथ गाये थे, तो उनको बहुत पैसा मिला। हमलोग चाची को लेकर घर आ गये।

आसिफ अंसारी, कक्षा–3,
मियाँ भटकन

आने वाला थीम

15 अगस्त
धान की रोपाई
रक्षा बंधन
सावन का महीना
शादी

कहानी

एक राक्षस रहता था

किसी जंगल में एक राक्षस रहता था, वहीं एक गांव था, गांव में एक राजा रहता था, उनका नाम रूपेश प्रताप था, गांव का नाम रामपुर था। एक बार राजा शिकार कर उस जंगल में गये। उन्होंने एक सुअर का शिकार किया। तभी राक्षस बोला, यह मेरा शिकार है, इस जंगल का शिकार सिर्फ मैं करता हूँ खाता हूँ। तभी राजा बोले तुम हमें नहीं जानते, मैं यहां का राजा हूं। तभी राक्षस बोला मैं इस जंगल का राक्षस हूँ। राजा अपना शिकार लेकर जा रहा था, तभी राक्षस राजा पर आक्रमण कर दिया। राजा राक्षस को अपनी तीर–धनुष से मार डाला, और शिकार को अपने घर लेकर चल गया।

रूपेश सिंह, कक्षा–8, भीखपुर

कविता

आम का मौसम

सर्दियों से है आम का लालच
गर्मी कब आयेगी।
साथ में आम का मौसम लाएगी
गर्मी जब आता है,
सब बच्चे खुश हो जाते हैं
सदियों से है आम का लालच
गर्मी कब आएगी।
प्रेम का झुला, झुलाने के लिए
टहनिया कब फैलाएगी
सदियों से था इंतजार अब
जाकर होगा पुरा
आम खाने का लालच
नहीं रहेगा अधुरा।

मुस्कान, कक्षा–8, जमापुर

आपबीती

नया स्कूल में एडमिशन

हमलोगों को नया स्कूल में नाम लिखा जाता है। हमलोगों को नया में बहुत अच्छा लगता है उसमें तरह तरह के बच्चे हैं और सर भी बहुत अच्छे पढ़ाते हैं। और सर मैडम भी बहुत अच्छी पढ़ाती है। हमलोगों को स्कूल परिवर्तन जैसा स्कूल बहुत अच्छा लगता है। हमलोग इस स्कूल में नया नया किताब मिलता है।

अंजली कुमारी, कक्षा–6,
मियाँ भटकन

चुटकुला

एक बहुत बड़ा बगीचा था उस बगीचे के आगे एक बोर्ड लगा था उस पर लिखा था कि जो व्यक्ति इस बगीचे से फल तोड़ेगा उसको फल निगलना होगा।

उस बगीचे में मोदी जी, लालु यादव और नितिश कुमार गये।

मोदी जी– एक बार बैर तोड़े तो गार्ड बोला अब आपको इसे निगलना पड़ेगा, मोदी वैर को निगल गये।

लालु जी– आम तोड़कर रोने लगते है, गार्ड बोला आप रो क्यों रहे है? फिर लालु जी हँसने लगे गार्ड बोला हँस क्यों रहे है?

मैं इसलिए रो रहा हूँ कि इस आम को कैसे निगलु। और मैं इसलिए हँस रहा हूं कि नितिश उधर बड़ा सा कटहल तोड़ कर बैठा है।

रिमझिम सिंह, कक्षा–6, बड़हुलिया

आपबीती

मेरी बहन

हमारी एक बहन है, वह बहुत चंचल है, एक दिन वह विद्यालय जा रही थी। तो उसे रास्ते में कुत्ता काट लिया उसकी सहेली उसी रास्ते से गुजर रही थी। वह देखी तो तुरंत मुझे खबर दी, मैं दौड़ते–दौड़ते विद्यालय के रास्ते के तरफ आया, मुझे रोने की आवाज सुनाई दी, मैं तुरंत आवाज के दिशा में दौड़ा, मेरी बहन खुब जोर–जोर से रो रही थी, मैं उसे लेकर डॉक्टर के पास गया, डॉक्टर मेरी बहन मुन्नी को सुई दिया वह और जोर–जोर से रोने लगी, मैंने उसे चुप कराया वह धीरे–धीरे चुप हो गई, वह दो दिनों में ठीक भी हो गई और अपनी सहेली के साथ विद्यालय पढ़ने जाती है।

शाहिद अंसारी, कक्षा–5,
मियाँ भटकन

अपनी बात

आम

आम के पेड़ पर चिड़िया रहती है, चिड़िया पेड़ पर घोंसला बनाती है, वह मीठा–मीठा आम खाती है। खट्टा आम को नहीं खाती है, कच्चा आम खाने से पेट में पीड़ा होता है।

आदित्य कुमार, कक्षा–3,
मियाँ भटकन

आम कच्चा रहता है, तो खाने में खट्टा लगता है, जब पक जाता हे तो मिट्ठा लगता है। बाजार जाते हैं, आम खरीदते है, 40 रूपया आम बिकाता है, 1 किलो लाते हैं, खुब मजे से खाते हैं।

सूरज कुमार, कक्षा–3,
मियाँ भटकन

कविता

बारिश आई बारिश आई
छम–छम बारिश आई
जंगलों में हरियाली छाई
सबके मन को बहलाई
मोर खुब झुमकर नाचे
पपीहा अपने गीत सुनाते
नदियों में पानी आई
खेतों में हरियाली छाई
बारिश आई बारिश आई
छम–छम बारिश आई।

फिरोज अली, कक्षा–12, नरेन्द्रपुर

लेख

रामनवमी

राम नवमी का पर्व चैत्य महिना में मनाया जाता है, राम नवमी के दिन राम जी का जन्म हुआ था, उनके जन्म को उत्सव के रूप में मनाया जाता है, अयोध्या के राजा दशरथ के यहाँ जन्म हुआ था, चारों भाई का जन्म साथ मनाया जाता है, राम, लक्ष्मण, भरत और शत्रुघन।

इस दिन हम पुजा करते हैं।

शुभम कुमार, कक्षा–6, गड़ार

हमारी बोली

एगो गाँव में एक बगीचा रहे, ओमे आम का गाछ रहे, ओऊ बगीचा में बहुत आम फरल रहे, ऊ बगीचा में एगो बुढ़िया रहे, ऊ आम अगोरत रहे, जब ऊ बुढ़िया घरे खाना खाये जाब त, ओकर आम केहू जाके तुर लेव। ऊ जब खाना खाके आवे त खुब गाली देव, अऊरी ऊ बुढ़िया केहु जाये त पूछो ए तू देखलहा के आम तुरलसा त लोग कहे ना हम ना देखनी हा। बुढ़िया अब घरे खाना खाये न जाओ खाली आम अगोरे।

विशाल कुमार, कक्षा–5
भँगरा उज्जैन

कविता

शादी

आज मेरे घर है शादी
खुब दिनों से चल रही थी तैयारी
खुब मिठाई आया घर में
सब लोगों को खिलाया मिठाई
और मैंने देखा,
एक लड़का रो रहा था कोने में
मैंने उसके हाथों में
दे दी मिठाई
वह हँसते–हँसते चला गया
जब बारात आया घर में
खुब पटाखे छुट रहे थे
दुल्हा आया घोड़ा पर
घोड़े का रंग काला था
और दुल्हे का जुता
आचानक हो जाता है गायब
जब दुल्हा देता है पैसा
अचानक जुता आ जाता है,
आज मेरे घर है शादी

मेहताब अंसारी, कक्षा–10, नरेन्द्रपुर

तक्षशिला पब्लिकेशन द्वारा परिवर्तन के लिए प्रकाशित। सज्जा एवं मुद्रणः इमेजिका ग्राफिक्स